Research Paper Hindi

आधुनिक युग बोध के आयाम
(Aadhunik Yug Bodh Ke Aayam)

Dr. Madhulika | Assistant Professor in Hindi, C. R.M. Zaat P. G. Collej, Heesar.

स्वातन्त्रयोत्तर पीढी के रचनाकारों ने अपने पक्ष के समर्थन में रचना–प्रक्रिया की नयी व्याख्या प्रस्तुत की है। इस व्याख्या को सैद्धान्तिक रूप देने के लिए उन्हें 'आधुनिकता' तथा 'आयुनिक युगबोध' जैसे पारिभाषिक शब्दों को गढ़ना पड़ा है। अविवेकपूर्ण ढंग से 'आधुनिकता' की हर एक फैशन तोता–रटन्त अन्धानुकरण या गतानुगतिका – मात्र है, जो इस आशंका का परिणाम है कि हम अनाधुनिक न समझ लिये जाएं और 'आधुनिकता' के विभिन्न पहलुओं का योगदान रहा है।

साहित्य और परिवर्तित परिवेश :
इसी एक तत्व के आधार पर काव्य–साहित्य की स्थिति मानना भूल होगी। सफल साहित्य में इस तत्व के साथ उन तत्वों का भी योग रहता है, जिनका स्वरूप जीवन की गति के साथ परिवर्तित होता रहता है और साथ ही, जिनसे एक विशेष प्रक्रिया द्वारा सम्बद्ध होकर, यह शाश्वत तत्व अपने मूलरूप में रहता हुआ भी विकसित होता रहता है। प्रत्येक युग में हमारी जीवन स्थितियां समान नहीं रहती। बदलती हुई जीवन स्थितियां नये जीवन– मूल्यों को जन्म देती है वे नये मूल्य जब हमारी भावात्मक सत्ता को प्रभावित करके, हमारी रागात्मकता का अंग बनकर, साहित्य में प्रतिफलित होने लगते हैं, तो युगानुरूप आदर्शों, प्रेरणाओं उपादानों और अभिव्यक्ति प्रणालियों की नवीनता भी आवश्यक होती है। साहित्य के स्थायी और परिवर्तनशील मानों में इस प्रकार का रूपान्तर ही किसी युग के साहित्य को गत युगों के साहित्य से विशिष्टता प्रदान करता है और उसकी नयी प्रवृतियां अपने युग में 'आधुनिक' कहलाने की अधिकारिण ी होती है। आगे चलकर जीवन–स्थितियों में पुनः परिवर्तन हो जाने पर वे प्रवृतियां 'आधुनिक' पद को छोड़कर परम्परा का अंग बन जाने के लिये बाध्य होती हैं और उनके स्थान पर नयी उद्भूत प्रवृतियां 'आध ुनिकता' का आसन ग्रहण करती है। इसलिए कहा गया है कि ''नवीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में अप. ने–आप का संस्कार करते चलना ही आधुनिकता है। अतः आधुनिकता तो इतिहास में समय–समय पर आती रहती है और आती रहेगी। ''मूल से या अतीतत से जुड़े रहकर ही आधुनिकता सचमुच आधुनिकता बनती है, सार्थक होती है, दोनों नेत्रों से जाती है, कानी नहीं (एक आंख से देखना) रहती।

इस प्रकार शुद्ध साहित्य सदा आधुनिक रहता है, जो अपने युग से जीवन ग्रहण कर युग तक सीमित नहीं रहता, युग–युग तक जीवित रहता है।

आधुनिकता और आधुनिकीकरण :
इन दोनों में भेद हैं आधुनिकता बुद्धिवादी मनोवृति को कहते हैं 'आधुनिकीकरण' का अर्थ है उद्योग, समृद्धि, सैन्यबल, साक्षरता और अवकाशहीनता है, जितने भी अविकसित देश हैं, वे आधुनिकता नहीं, आधुनिकीकरण की ओर लोभ से देख रहे हैं। यूरोप में आधुनिकता पहले आयी थी, आधुनिकीकरण बाद में प्रकट हुआ। पहले बुद्धिवादी दृष्टिकोण की प्रधानता हुई, विज्ञान उसके बाद बढ़ा, अर्थात् यूरोप का मन पहले बदला और शरीर बाद में। भारत और एशिया के देश चाहते हैं कि उनका शरीर तो यूरोप जैसा हो, लेकिन मन अपना ही रहे। क्या यह सम्भव है ?

आधुनिकता और जीवन–मूल्य :
आधुनिकता को जीवन – मूल्य की संज्ञा दी जाए अथवा उसे जीवन – प्रक्रिया कहा जाए। इस सम्बन्ध में भी विद्वान एकमत नहीं है ''मूल्य'' का संबंध उपयोगिता से है। सामान्यतः वे आदर्श अथवा तत्व, जो जीवन को स्थायित्व और सार्थकता प्रदान करते हैं, जीवन – मूल्य कहलाते हैं।

समस्त वैचारिक समग्रता मूल्यों के इसी परिवेश में घूमति रहती है। व्यक्ति की प्रतिभा, मौलिकता, विवेचनात्मकता, संकीर्णता, नवीनता आदि की व्याख्या के यही संदर्भ है। व्यक्ति विशिष्ट मूल्य के सन्दर्भ में ही सोचता है। मानसिक चिन्तन–प्रक्रिया का विकास करता है, बुद्धिजीवी बनता है तथा अपने समस्त वैचारिक चिन्तन को स्थापित्व देता है। इस प्रकार 'मानव मूल्य तथा चिन्तन–प्रक्रिया का अनिवार्य अंग होने के कारण, मूल्यधर्मी है, वही है, जो मूल्य है।

आज की आधुनिकता के चार स्तर :
यद्यपि प्रत्येक युग की आधुनिकता भिन्न होती है, तथापि हर युग में वह पूर्ववर्ती परम्पराओ को अन्तर्मुक्त करती हुई नवीनतम वैज्ञानिक, दार्शनिक और सामाजिक उपलब्धियों के आधार पर नवीन जीवन–मूल्यों की स्थापना करती है। आज की आधुनिकता को चार स्तरों पर रखकर देखा समझा जा सकता है।

परिवेश :
यह आधुनिकता का पहला स्तर है। वस्तुतः आज की आधुनिकता परिवर्तित भाव–बोध की वह स्थिति है, जिसका प्रादुर्भाव यान्त्रिक तथा वैज्ञानिक विकास क्रम के वर्तमान बिन्दु पर आकर हुआ है जिस विज्ञान को रोमानी चमत्कार, सुख–सुविधा, प्रगति और सभ्यता के अग्रगामी चरण के रूप में स्वीकार किया गया था। उसी विज्ञान तथा प्रविधि का महाध्वंसक रूप विश्व–युद्धों के रूप में सामने आया। जिन पश्चिमी देशों में यान्त्रिक तथा वैज्ञानिक प्रगति बहुत पहले हो चुकी थी, वहां भी ये समस्याएं अभूतपूर्व तथा अप्रत्याशित रूप में सामने आयी। पूरी–पूरी जातियों, संस्कृतियों तथा अल्पसंख्यकों को जड़मूल से नष्ट कर देने की धारणाएं, गणित तथा सांख्यिकी के आधार पर रचे गये। पूर्व–निश्चित हत्याकाण्ड मनदोहन की क्रिया–विधियां, सम्पूर्ण युद्ध की स्थापनाएं विश्व का दो मतवादों के शिविर तथा उनके रूपान्तरों मे केन्द्रीभूत हो जाने का क्रम वैचारिक समर तथा व्यापारिक सत्लनते– सम. र–संस्कृतियां, शीतयुद्ध, तटस्थता, अन्तर्राष्ट्रीयता, सर्वशक्तिमान नियन्ता राज्यों का उदय, बढ़ती हुई आबादी बड़ी–बड़ी भीड़ें, आदमी को मात्र संख्या सामग्री या विभिन्न व्यवसायों, की यन्त्रवत् इकाई के रूप में ग्रहण करने की दृष्टि, विज्ञान के हाथों व्यक्ति के क्रमशः यूथों में परिणत हो जाने की नियति, अन्तरिक्ष–विजय, अणु–शक्ति के उपद्रव, इत्यादि यथार्थ तथा संकट, इन सबके ऊपर अवहोने मारक अस्त्रों से मिनटों में संसार की सामूहिक आत्महत्या का भय, से सब ऐसी अकल्पनीय वस्तुस्थितियां है, जो अब तक इतिहास में कभी आयी ही नहीं थी।

भाव–क्षेत्र :
इसने परिवर्तित विश्व–व्यापी सन्दर्भ ने मानवीय भाव–बोध को एक गहरा तात्विक आघात पहुंचाया और समस्त पूर्ववर्ती मान्यताएं बढ़ती चली गयी। सुदृढ़ आस्थाओं के स्थान पर आकण्ठ अवसाद, भय, आशंका, संशय, अनिश्चय, क्षोभ, आक्रोश और विडम्बना से मानव–मन आक्रान्त हो उठा। वह अपने बाह्य जीवन में अजनबी तथा आन्तरिक जीवन में स्वयं को विस्थापित अनुभव करने लगा।

दार्शनिक पक्ष :
बीसवीं शताब्दी तक आते–आते मानव सभ्यता प्रगति के लगभग शीर्ष बिन्दु तक पहुंच गयी है। निसंदेह औद्योगिक विकास ने मानव जाति को अनेक सार्वजनिक सुख–सुविधाएं प्रदान की है, किन्तु मानवीय सुविधाओं को आनुपातिक अभिवृद्धि के पश्चात् भी मानव मन असन्तोष तथा अशान्ति से ग्रस्त है। आध ुनिकता के इस तथ्य से दार्शनिक स्तर पर कुछ मौलिक प्रतिक्रियाएं हुई है। इस संदर्भ में अस्तित्ववादी दर्शन विशेष उल्लेख्य है। परिणाम स्वरूप वृतियां अन्तर्मुखी होती से चली गयी और आत्मनिष्ठ दृष्टियों का विकास हुआ। मनुष्य स्वयं को अधिक गहराई से समझने का प्रयत्न करने लगा। वह क्या है, कौन है, संसार में क्यों आता है, किसके लिए जीवित रहता है, आदि प्रश्न एक नवीन अर्थपता के साथ पुनः उठे हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि ''इन्हीं सब व्यर्थताओं और विभीषिकाओं के बीच होकर, उनका बोझ मन पर ढोते हुए पुरानी आस्थाओं को खोकर, नयी किसी आस्था के अभाव में, जो एक भाव–बोध बनता है, घोनिराशा और अविश्वास जिसका आवश्यक तत्व है, उसकी को 'आधुनिक भ. ाव–बोध' की संज्ञा दी जाती है।

अभिव्यक्ति साधनों का विस्तार :
इसे आधुनिकता का चौथा स्तर कहा जा सकता है। नयी वास्तविकताओं से प्राप्त संवेदनाओं और नवीन सा. ौन्दर्य बोध को सफल वाणी देने में परम्परा प्रयुक्त माध्यमों की क्षमता अपर्याप्त है। इसके लिए युगानुरूप नवीन भाषा–भंगियों, नये मुहावरों, बिम्बों, प्रतीकों, मिथकों, कल्पना–चित्रों, छन्दो और लय–विधान आदि की खोज अनिवार्य है। कहना न होगा कि आधुनिक युगबोध का यह पक्ष भी सक्षम और सबल रूप में प्रकट हुआ है।

आधुनिकता और समसामयिकता :
आधुनिकता के साथ समसामयिकता का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है। समसामयिकता का सन्दर्भ इस बात पर आधारित है कि मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक क्षण, छोटे से छोटे क्षण के प्रति भी अपना एक ममत्व और अपनी एक दृष्टि रखता है अथवा रखता है।

आधुनिक की अन्तरचना और उसके आयाम को 'समसामयिक' ;ंबवदजमउचवतंतलद्ध और वर्तमान ;च्तमेमदजद्ध से अलग कर भी देखा जा सकता है। 'समसामयिक' और 'वर्तमान' का काल–विस्तार 'आधुनिक' की अपेक्षा बहुत कम है। उदाहरणार्थ – 'आधुनिक युग' में हम भारतेन्दु से लेकर आज तक के काल–विस्तार को समाहित करते हैं। इस प्रकार 'आधुनिक युग' में कितने ही 'समसामयिक' व 'वर्तमान' समाये हुए हैं। आधुनिक में जो विस्तार और गहराई है, वह मात्र सामाजिक या मात्र वर्तमान में नहीं है। स्पष्ट है कि आधुनिकता युग विशेष का गुण है और समसामयिकता स्थिति विशेष का आयाम है। ''आधुनिकता एक ऐतिहासिक विश्लेषण है, जो हमें देशकाल का बोध देती है। सम. सामयिकता देशकाल के बोध के साथ सक्रियता की भी पुष्टि करती है। जिस भी देशकाल में हम है, उसकी सीमाओं और विस्तार को हम समसामयिकता के यथार्थ द्वारा अनुभव करते हैं। जीवन के इन्हीं सन्दर्भों में, आधुनिकता के परिवेश और समसामयिकता के आयाम में, हमें अपनी दृष्टि अपने दायित्व का बोध होता है।

REFERENCES

1. डॉ0 विष्णुस्वरूप, नया साहित्य : कुछ पहलू, पृ0 5 द्य 2. डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी, नव लेखन, पृ0 13 द्य 3. डॉ0 रामेश्वरलाल खण्डेलवाल, 'आधुनिकता और नवीन भाव–बोध' 'सम्भावना' 1973 पृ0 85 द्य 4. डॉ0 विजयमोहन शर्मा, साहित्य वेषण (भूमिका) पृ0 2 द्य 5. योगेन्द्र सिंह, 'मानव–मूल्य तथा काव्य–बोध' 'माध्यम' जनवरी, 1969 पृ0 49 द्य 6. गिरिजा कुमार माथुर, नयी कविता : सीमाएं और सम्भावनाएं पृ0 206–7 द्य 7. डॉ0 विनयमोहन शर्मा वही, पृ0 2 द्य 8. अमृतराय आधुनिक भाव बोध की संज्ञा 'विकल्प' (प्रवेशांक), मई 1967, पृ0 32 द्य 9. लक्ष्मीकान्त वर्मा, नयी कविता के प्रतिमान पृ0 265 द्य 10. डॉ0 हरिश्चन्द्र वर्मा नयी कविता और काव्य के स्थायी मूल्यों का प्रश्न' 'माध्यम', फरवरी 1968, पृ0 33 द्य